संपादक का नोट

मसीह में मेरे प्रिय प्यारे भाइयों और बहनों, मैं आप सभी को मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अतुलनीय नाम में नमस्कार करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ कि प्रभु ने पिछले महीने में आप सभी का अच्छे से ख्याल रखा है। इस्राएल के परमेश्वर ने लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण के अनुसार शास्त्रों में अपने नियम दिए हैं, ताकि अपने ही लोगों को इस दुनिया में कैसे रहना है यह दिखलाए। प्रभु ने इस दुनिया के सभी लोगों के लिए अपनी दस आज्ञाओं को दिया है। वह कहता है व्यवस्थाविवरण 25 : 1 ''यदि मनुष्यों के बीच कोई झगड़ा हो, और वे न्याय करवाने के लिए न्यायियों के पास जाएं, और वे उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएं।'' प्रभु हमारे न्यायाधीश है। वह हमारा धर्मी न्यायाधीश है। जब इस दुनिया के लोग न्यायाधीशों को रिश्वत देकर फैसले को बदलकर आपके खिलाफ आते हैं, तब उस समय हमारे धर्मी न्यायाधीश, राजाओं के राजा को बुलाओ; वह तब तक चुप नहीं होगा जब तक कि वह आपको सही न्याय नहीं दे देता। दाऊद के तम्बू में यह फैसला सच है। यशायाह 16 : 5 ''तब दया के साथ एक सिंहासन स्थिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तम्बू में सच्चाई के साथ एक विराजमान होगा जो सोच विचार कर सच्चा न्याय करेगा और धर्म के काम पर तत्पर रहेगा।'' हमारे हाथों में हम पवित्र शास्त्रों को पकड़े हुए हैं। इसे पवित्र बाइबल भी कहा जाता है। बाइबल की भूमिका लोगों को स्वर्गीय न्याय सिखाना भी है। बाइबल के अनुसार, जो सही न्याय देता है वह धन्य है। पुरे बाइबिल में कम से कम 40 महत्वपूर्ण निर्णय दिए गए हैं। स्वर्ग में गर्व स्वर्गदूत लूसिफेर पर पहला न्याय सुनाया गया था। अंतिम न्याय भी स्वर्ग में, महान सफेद सिंहासन से होगा। दुनिया में पैदा हुए सभी लोग, छोटा और बड़ा, न्याय के लिए प्रभु के सामने खड़े होंगे। प्रकाशितवाक्य 20 : 11–15 ''11 फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस को जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिस के सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उन के लिए जगह न मिली। 12 फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को

सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। 13 और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया। 14 और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। 15 और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।''

पृथ्वी पर, पहला न्याय आदम और हव्वा पर आया था। उसके बाद यह पृथ्वी और सर्प पर आया था। आदम और हव्वा के कारण, सभी मानव जाति और पृथ्वी को दर्द भुगतना पड़ा। उत्पत्ति 3 : 17–19 ''17 और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैंने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा। 18 और वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा 19 और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।'' नूह के समय, प्रभु ने लोगों के अधर्म और पापों को देखा। उत्पत्ति 6 : 3–6 ''3 और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है: उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी। 4 उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए, वे पुत्र शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीन काल से प्रचलित है। 5 और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। 6 और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ।''

मनुष्य के दुष्ट व्यवहार के कारण, प्रभु पृथ्वी के निवासियों को नष्ट करना चाहते थे। पानी आ गया और सभी लोगों को ले गया और कोई नहीं बचा, परन्तु धर्मी पुरुष नूह और उसके परिवार को, जो कि एक सुंदर तरीके से बचाए गए जो जानवरों के सभी जोड़े जो उसके साथ बड़े जहाज में थे।

प्रभु पश्चाताप के लिए समय देता है। नूह के समय प्रभु ने धीरज से 120 साल तक इंतजार किया। वह धैर्यपूर्वक यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि लोग अपने मन को बदल देंगे। लेकिन लोगों ने उस समय का उपयोग नहीं किया। नूह और उसके परिवार ने जहाज में प्रवेश करने के बाद भी, यहोवा सात दिन इंतजार कर रहे थे। उत्पत्ति 7 : 7–10 ''7 नूह अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत, जलप्रलय से बचने के लिए जहाज में गया। 8 और शुद्ध, और अशुद्ध दोनो प्रकार के पशुओं में से, पक्षियों, 9 और भूमि पर रेंगने वालों में से भी, दो दो, अर्थात नर और मादा, जहाज में नूह के पास गए, जिस प्रकार परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी। 10 सात दिन के उपरान्त प्रलय का जल पृथ्वी पर आने लगा।'' यीशु ने कफरनहूम पर फैसला सुनाया, जैसा कि मत्ती 11 : 23 ''और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए है, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।'' आज तक उस शहर का निर्माण नहीं किया गया है। प्रभु ने नीनवे पर दया की प्राप्ति के बाद भी वे पाप करते रहे, इसलिए प्रभु ने अंत में शहर को नष्ट कर दिया (नहूम 2)। यहां तक कि सोर और सिदोन अब अपनी महिमा के दिनों में नहीं हैं, लेकिन अब वे उदास और बिगड़ा हुआ शहर हैं। तो मेरे प्यारे प्रियों, हमारे प्रभु के न्याय से डरो। अपने विवेक के अनुसार चलो और प्रभु के वचन हमें रास्ता दिखाएगा। एक दिन हम भय, दर्द और दुख के साथ महान श्वेत सिंहासन के सामने खड़ा नहीं होना चाहिए। तो हम में अच्छा विवेक होना चाहिए ताकि हम हमारे प्रभु के सामने सच्चाई से चले। दाऊद कहता है भजन संहिता 139 : 1–3 ''1 हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है। 2 तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। 3 मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।''

उसी तरह हर दिन प्रभु से प्रार्थना करो और उस कानून के अनुसार चलो, जो आपके हाथ में परमेश्वर ने दिया है। इस प्रकार आप स्वर्ग में आनन्दित होंगे!

जब तक हम फिर से मिलेंगे, तब तक प्रभु आप सभी को आशीर्वाद दे।

मसीह में,

पास्टर सरोजा म.

प्रभु की वीरता का पराक्रमी मनुष्य।

न्यायियों 6 : 11–12 ''11 फिर यहोवा का दूत आकर उस बांजवृझ के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था, और उसका पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूं इसलिए झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा रखे। 12 उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।'' हमारे प्रभु हमें एक नाम 'वीरता का आदमी' देता है, हममें से कोई भी कमजोर नहीं है। किसी को भी नहीं सोचना चाहिए ''मैं यह काम नहीं कर सकता, मैं वह काम नहीं कर सकता'' वचन कहता है फिलिप्पियों 4 : 13 ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।'' प्रभु के माध्यम से हम सभी कार्यों को पूरा करने की शक्ति प्राप्त करते हैं। प्रभु जब वह एक जवान आदमी था नबी यिर्मयाह को बुलाया यिर्मयाह 1 : 6,8 ''6 तब मैं ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना ही नहीं जानता, क्योंकि मैं लड़का ही हूँ।'' यिर्मयाह ने कहा कि मैं बात नहीं कर सकता क्योंकि मैं एक बच्चा हूँ। उस पर प्रभु ने कहा यिर्मयाह 1 : 8 ''तू उनके मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिए मैं तेरे साथ हूँ, यहोवा की यही वाणी है।'' लेकिन प्रभु परमेश्वर यिर्मयाह को बताता है ''डर मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ'' जब प्रभु हमारे साथ हैं, तो कुछ भी असंभव नहीं है, हम उसके माध्यम से सब कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार, हम सभी 'वीरता के पुरुष' हैं। प्रभु ने यिर्मयाह को बुलाया और उससे वादा किया कि ''मैं तुम्हारा उद्धार करने के लिए हूं'' यिर्मयाह एक 'वीरता के शक्तिशाली व्यक्ति' बन गए यिर्मयाह 20 : 11 ''परन्तु यहोवा मेरे साथ है, वह भयंकर वीर के समान है; इस कारण मेरे सताने वाले प्रबल न होंगे, वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए उन्हें बहुत लज्जित होना पड़ेगा। उनका अपमान सदैव बना रहेगा और कभी भूला न जाएगा।'' पवित्र शास्त्र में, एक 'वीर का आदमी' था जिसे प्रभु ने गिदोन कहा था। गिदोन एक साधारण आदमी था और प्रकृति में भयभीत मनुष्य था। परन्तु जब प्रभु ने उसे आशीर्वाद दिया, तो उसने उसे 'वीरता का पराक्रमी मनुष्य' कहा। आइए पढ़ें न्यायियों 6 : 11–12 ''11 फिर यहोवा का दूत आकर उस बांजवृझ के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था, और उसका पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूं इसलिए झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा रखे। 12 उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।'' गिदोन एक भयभीत मनुष्य था, वह मिद्यानियों से डरता था। लेकिन

यह प्रभु है जो उसे 'वीरता का पराक्रमी आदमी' कहा था। यहां तक कि हमारे जीवन में, हम कई विचारों और जीवन के कामों से भयभीत हो सकते हैं। लेकिन याद रखें, प्रभु की सेना में हम सभी 'वीरता के पराक्रमी पुरुष' हैं। यही कारण है कि जब इस्राएली मिस्र से निकल आए थे और जब वे मोआब के मैदानों में डेरे डाले, तो राजा बालाक और मोआबियों ने इस्राएलियों को देखा और वास्तव में उनसे डरते थे। इसलिए बालाक ने बिलाम को इस्राएलियों को शाप देने के लिए भेजा था क्योंकि उन्होंने सोचा था कि वे एक विशाल सेना हैं और बहते नदी की तरह हैं। बालाक ने इस्राएलियों को शाप देने के लिए नबी बिलाम का चुनाव क्यों किया, क्योंकि जब कोई नबी आशीर्वाद देता है तो वह धन्य होगा और जब वे किसी को शाप देंगे तो उन्हें शाप दिया जाएगा। इस प्रकार, बालाक ने इस्राएलियों को शाप देने और उन्हें कमजोर करने के लिए बिलाम को भेजा। इस प्रकार वह उन युद्धों को जीत सकता है जो वह उनके खिलाफ खड़े होने की योजना बना रहा था। परन्तु परमेश्वर का आत्मा बिलाम पर आया और शाप देने के बजाय उसने उनके पक्ष में भविष्यद्वाणी की। यहाँ गिदोन एक साधारण आदमी है, जो मिद्यानियों से डरता था और उनसे दूर दूर रहता था और खेतों में खेती करता था। परन्तु परमेश्वर उससे बात करता है और उसे कहता है कि ''तुम वीरता के एक शक्तिशाली व्यक्ति हों'' इस प्रकार, यहां तक कि हमें अपने बारे में नीचा नहीं सोचना चाहिए, हमें सभी को यह सोचना चाहिए कि हमारे पराक्रमी परमेश्वर ने हमें 'वीरता के पराक्रमी पुरुष' बना दिया है।

भजन संहिता 84 : 5–7 ''5 क्या ही धन्य है, वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिन को सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है। 6 वे रोने की तराई में जाते हुए उसको सोतों का स्थान बनाते हैं; फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष उपजाती है। 7 वे बल पर बल पाते जाते हैं; उन में से हर एक जन सिय्योन में परमेश्वर को अपना मुंह दिखाएगा।'' प्रभु की दृष्टि में हम साधारण व्यक्ति नहीं हैं, हम ने प्रभु से हमारी ताकत प्राप्त की है और हम सियोन पर्वत के ऊपर उच्च रहते हैं। यशायाह 40 : 11 '' वह चरवाहे की नाईं अपने झुण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे धीरे ले चलेगा।'' हमारा अच्छा परमेश्वर हमें बहुत प्यार करता है, जो लोग चल नहीं सकते वह उन्हें उठा लेगा और उन युवाओं को वह अपना हाथ पकड़कर उन्हें नेतृत्व करेंगे। वह एक अच्छा परमेश्वर है, आज भी वह हमारी कमजोरियों और कमियों को जानता है, वह जानता है कि हम क्या

कर सकते हैं और हम क्या नहीं कर सकते। फिर भी, वह हम सभी को ''वीरता के पराक्रमी पुरुष'' बना देता है। लेकिन, हमारे लिए यह आशीर्वाद केवल तब तक है जब तक हम प्रभु के साथ हैं। प्रत्येक दिन हमें प्रभु को आशीर्वाद देना चाहिए क्योंकि वह हमारा हाथ पकड़ता है और हमें नेतृत्व करता है और वह जो कमजोर हैं और जो चल नहीं सकते वह हमें उठा लेता है। हर दिन हमारे प्रभु केवल हमारे लिए अच्छा करता है, यह हमें अपने दिल में विश्वास करना चाहिए। परमेश्वर के हर वचन को स्वीकार करना चाहिए। हमें खुशी से 'वचन' के लिए अपना दिल खोलना चाहिए जो कि प्रचार किया जा रहा है, जब हम अपनी उत्सुकता दिखाते हैं, तो परमेश्वर हमें वचन को समझने के लिए अपने दिव्य बुद्धि से आशीर्वाद देगा। 'परमेश्वर का वचन' सुनने के लिए हमारे दिल में ऐसी ज्वलंत इच्छा होनी चाहिए।

भजन संहिता 52 : 8 ''परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जलपाई के वृक्ष के समान हूं। मैं ने परमेश्वर की करूणा पर सदा सर्वदा के लिए भरोसा रखा है।'' दाऊद खुद को इस लेख में हरे जैतून के पेड़ से तुलना करते हैं। प्रभु ने कई पेड़ बनाए, लेकिन जैतून का पेड़ एक बहुत ही विशिष्ट पेड़ है, इसका अर्थ है 'आध्यात्मिक आशीर्वाद'। जैतून का पेड़ पानी में सड़ता नहीं है। इस प्रकार दाऊद कहते हैं, ''मैं परमेश्वर के घर में हरे जैतून के पेड़ की तरह हूं''। एक बार जब यीशु ने एक अंधे आदमी को चंगा किया और उसने उसे अपनी आँखें खोलकर आकाश की तरफ देखने को कहा। अंधा आदमी आकाश की ओर अपनी आंख खोलता है और कहता है, मरकुस 8 : 23–24 ''23 वह उस अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के बाहर ले गया, और उस की आंखों में थूककर उस पर हाथ रखे, और उस से पूछा; क्या तू कुछ देखता है? 24 उस ने आंख उठा कर कहा; मैं मनुष्यों को देखता हूं; क्योंकि वे मुझे चलते हुए दिखाई देते हैं, जैसे पेड़।'' अंधा आदमी अपने जीवन में पहली बार देखता है और वह आकाश की ओर देखता है और कहता हैं, ''मैं लोगों को वृक्षों की तरह चल रहा है देखता हूं''। जैसा कि दाऊद का मानना था कि वह परमेश्वर के घर में एक हरे जैतून का पेड़ है। हां, वे सभी जिन्होंने परमेश्वर की ताकत के साथ अपनी लड़ाई जीत ली है, वे सभी जैतून के पेड़ों की तरह हैं। हम सभी परमेश्वर के बच्चे हैं और परमेश्वर हमें केवल अपनी अनुग्रह के माध्यम से हमें मजबूत करता है। इस प्रकार, हम में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि ''मैं सभी चीजों को यीशु मसीह के माध्यम से कर सकता हूं''। केवल यीशु मसीह के नाम से, हम

इस दुनिया में सब कुछ करने के योग्य हैं। जब यीशु मसीह क्रूस पर जाने की तैयारी कर रहा था और जब पहाड़ की यात्रा करने जा रहे थे, पढ़ते है लूका 23 : 31 ''क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?'' यह वही है जो यीशु ने कहा था ''यदि वे मुझे करते हैं (हरे जैतून का पेड़), तो वे आपके साथ क्या नहीं करेंगे (सूखी पेड़)?'' जो लोग यीशु मसीह के विरुद्ध बोलते थे, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, जो अपने लिए उनके प्रेम को भूल गए थे, ये सब लोग यीशु मसीह के लिए सूखे पेड़ों की तरह हैं। यह निश्चित रूप से एक भयंकर वचन है। जब यीशु इस धरती पर थे, तो उन्होंने किसी के जीवन में दुख नहीं लाया था। परन्तु, वह इस दुनिया में प्यार और उनके प्यार को बहुतायत से देने के लिए आए थे। लेकिन जो लोग उस पर विश्वास नहीं करते थे, वे इस प्रेम को नहीं पहचानते थे। बल्कि लोग हमेशा उनके खिलाफ थे और वे हमेशा उनके लड़खड़ाने और गलती करने की तलाश कर रहे थे ताकि वे उसे दोषी ठहरा सकें। पर हमारा प्रभु परमेश्वर प्रेम है, वह कहता है लूका 23 : 31 ''क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?'' प्रभु पवित्र शास्त्र में विभिन्न पेड़ों की बात करते हैं, लेकिन वह आपके और मेरे बारे में क्या सोचते है? आइए हम पढ़ते हैं यिर्मयाह 11 : 16 ''यहोवा ने तुझ को हरी, मनोहर, सुन्दर फल वाली जलपाई तो कहा था, परन्तु उसने बड़े हुल्लड़ के शब्द होते ही उस में आग लगाई गई, और उसकी डालियां तोड़ डाली गई।'' प्रभु ने हमें 'हरी जैतून का पेड़' नाम दिया है, जो प्रभु से प्रेम करते हैं, उन्होंने उन्हें 'हरी जैतून का पेड़' नाम दिया है। हममें से जो सोचते हैं कि हम कुछ भी लायक के नहीं हैं और जीवन में बेकार हैं, हमें इस नाम से प्रोत्साहित होना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें दिया है। हम कांटेदार वृक्ष नहीं बल्कि हरी जीवित पेड़ हैं। प्रभु ने हमेशा सोचा है कि जैतून का पेड़ एक बहुत ही उपयोगी और बहुमूल्य वृक्ष है। प्रभु के तीन महत्वपूर्ण पेड़ हैं 1) अंजीर वृक्ष – का मतलब है इजरायल की सफलता/प्रगति 2) अंगूर बेल – का मतलब है परिवार 3) जैतून के पेड़ – का अर्थ है अभिषेक। हमारे प्रभु ने हमें 'हरी जैतून का पेड़' नाम दिया है, जिसका अर्थ है कि हम उनके अभिषिक्त बच्चे हैं। एक बार, सारे पेड़ हरी जैतून के पेड़ के पास आते हैं और कहते हैं, आइए पढ़ें न्यायियों 9 : 8–9 ''8 किसी युग में वृक्ष किसी का अभिषेक करके अपने ऊपर राजा ठहराने को चले; तब उन्होंने जलपाई के वृक्ष से कहा, तू हम पर राज्य कर। 9 तब जलपाई के वृक्ष ने कहा, क्या मैं अपनी उस चिकनाहट को छोड़कर, जिस से लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों का आदर मान करते हैं, वृक्षों

का अधिकारी हो कर इधर उधर डोलने को चलूं?'' सभी पेड़ों को जंगल में राजा की जरूरत है और वे जैतून के पेड़ से कहते हैं, ''आप हमारे ऊपर शासन करें''। लेकिन जैतून का पेड़ शांतिपूर्वक अस्वीकार करता है और सभी पेड़ों को जवाब देता है। वचन ''9 तब जलपाई के वृक्ष ने कहा, क्या मैं अपनी उस चिकनाहट को छोड़कर, जिस से लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों का आदर मान करते हैं, वृक्षों का अधिकारी हो कर इधर उधर डोलने को चलूं?'' प्रभु के अभिषिक्त बच्चों को उनकी सेवा करनी चाहिए, उनके लिए प्रभु की कृपण अनुग्रह के लिए कई और आत्माएं लाने के लिए महत्वपूर्ण है। इस दुनिया में राजा और रानी होने के बजाय, हमें अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए। हमें अपने नाम पर महान और शक्तिशाली चीजों के द्वारा प्रभु के लिए चमकने की आवश्यकता है। इस प्रकार, जैतून का पेड़ उन अन्य पेड़ों द्वारा की गई पेशकश को अस्वीकार कर देता है ताकि उन पर शासन किया जा सके। परमेश्वर के अभिषिक्त जनों को हमेशा पराक्रमी परमेश्वर की सेवा और दूसरों को आध्यात्मिक आशीर्वाद प्रदान करना चाहिए। इफिसियों 2 : 10 ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया।'' इस प्रकार, अभिषेकधारी लोग, जो यीशु मसीह के लहू से धुले हुए हैं, ताकतवर परमेश्वर की सेवा करें जैसे जैतून के पेड़ ने जंगल में सभी पेड़ों की पेशकश को अस्वीकार कर दिया, उनके ऊपर राज्य करने के लिए। 'इस दुनिया में सम्मान' पाने के लिए इस दुनिया में काम करना बेकार है। इब्रानियों 1 : 4 ''और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।'' याद रखें, प्रभु ने हमें स्वर्ग के स्वर्गदूतों के रूप में विशेष लोग बना दिया है। इब्रानियों 11 : 40 ''क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहिले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचे।'' हर काम में जो हम करते हैं, हम परमेश्वर के खास लोग हैं और हम अपने प्रभु को 'अब्बा पिता' पुकारने के योग्य बनाए गए है। जो लोग प्रभु पर विश्वास करते हैं, उन्होंने हमें अपने बेटे और बेटियों के रूप में बुलाया है यूहन्ना 1 : 12 ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।'' हम निश्चित रूप से विशेष लोग है जो की प्रभु के लिए शक्तिशाली और महान काम करने के लिए बुलाए गए है। 1 कुरिन्थियों 4 : 7 ''क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया; और जब कि तु ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड

क्यों करता है, कि मानों नही पाया?'' इसका उत्तर क्या है? 1 कुरिन्थियों 3 : 6 ''मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।'' यह प्रभु है जो हमारे जीवन में वृद्धि देता है। हमारे पास क्या है और हम क्या हैं, प्रभु के बिना हम 'कुछ नहीं' हैं। अगर हम प्रभु का धन्यवाद नहीं करते हैं, तो हम उसके बच्चे कहलाने के लिए योग्य नहीं हैं। इस प्रकार, हमें प्रभु के लिए आभार का दिल होना चाहिए। हम बहुत कठिन काम करते होंगे, लेकिन यह हमारा प्रभु है जो हमारे श्रम के फल देता है। यदि प्रभु हमारे साथ नहीं है, तो हम जो कुछ करते हैं वह अयोग्य है और उसकी दृष्टि में व्यर्थ है। नीतिवचन 21 : 31 ''युद्ध के दिन के लिए घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।'' हां, हम युद्ध के दिन के लिए कड़ी मेहनत कर सकते हैं, लेकिन विजय केवल परमेश्वर ही से प्राप्त होता हैं। नीतिवचन 16 : 33 ''चिट्ठी डाली जाती तो है, परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।'' हमारे जीवन में हम सब कुछ यीशु मसीह के द्वारा स्वयं प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, उसने हम में से हर एक को 'वीर का शक्तिशाली व्यक्ति' बनाया है। हमें हर क्षण परमेश्वर का शुक्रिया अदा करना चाहिए, जैसे यिर्मयाह ने प्रभु से पुकारते हुए कहा ''मैं छोटा हूँ और मैं हकलाता हूँ'', परन्तु परमेश्वर ने वादा किया कि वह हमेशा उसके साथ रहेगा, इस प्रकार यिर्मया बेधड़क होकर सभी को चुनौती देता है। हमारे जीवन में भी, हालांकि हम कड़ी मेहनत करते हैं, यह केवल यीशु मसीह के माध्यम से है, हमारे आशीर्वाद प्रवाह करेंगे। प्रभु ने अपने राज्य में काम करने के लिए अनपढ़ लोग को चुना हैं। उन्होंने मछुआरों को इस दुनिया में अपना काम करने के लिए चुना। प्रभु ने उन्हें छुआ और उन्हें अभिषेक करने के बाद, ये मछुआरे प्रभु के विशेष लोग बन गए। प्रभु ने अपने स्वर्गदूतों को अभिषेक नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनी महिमा के लिए आम लोगों को अभिषेक किया। मत्ती 3 : 11 ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'' प्रभु ने मछुआरों को बुलाया और उन्हें अभिषेक किया और उन्हें इस दुनिया में अपने काम करने के लिए हिम्मत दी। हां, आज भी वह हमें अभिषेक करने के लिए तैयार है और हमें 'हरी जैतून का पेड़' बनाने के लिए तैयार है, उनके अभिषिक्त बच्चे उनकी महिमा के लिए। प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, ''मैं वास्तव में आपको पानी के साथ बपतिस्मा देता हूं, लेकिन वह जो मुझ से शक्तिशाली है, वह आपको बपतिस्मा देने के लिए आ रहा है और आपको 'हरी जैतून का पेड़' बनाएगा। कौन आ रहा है? यीशु

मसीह आ रहा है। हाँ, वह अपने लोगों को आशीर्वाद देने आया था। पवित्र शास्त्र कहता है यूहन्ना 1 : 12 ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।'' लेकिन याद रखना कि बहुतों को बुलाया जाता है, कुछ लोगों को चुना जाता है। अंत में, जो इस दुनिया पर काबू पाएगा प्रभु बच्चे होंगे, चलो पढ़ते हैं प्रकाशितवाक्य 21 : 7 ''जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।'' हमें उसके कार्यों को करने की जरूरत है और उसके द्वारा दृढ़ होना चाहिए। यदि हम इस संसार में उलझे हुए हैं, तो हम निश्चित रूप से प्रभु से दूर चले जाएंगे और परमेश्वर से दूर रहकर हमारे जीवन में कोई आशीष नहीं पाएंगे। जैसे जैतून के पेड़ की तरह पानी की प्रचुरता में भी सड़ता नहीं है। हम जानते हैं कि जब नूह ने इस धरती पर 40 दिनों और बारिश की रात के विनाश के बाद इस धरती पर एक कबूतर भेजा, तो कबूतर एक जैतून का पत्ता वापस लाया। हालांकि इस दुनिया में कई परीक्षाएं और कष्टदायी हैं, वे हमें नष्ट करने की कोशिश करेंगे, लेकिन याद रखना चाहिए कि हम नष्ट नहीं होंगे क्योंकि हम परमेश्वर के 'हरी जैतून के पेड़' हैं – उनके द्वारा अभिषिक्त होकर उनके लिए महिमा करें। इस प्रकार इस दुनिया में राजा और रानी होने के बजाय, हमें प्रभु के लिए एक 'जैतून का पेड़' बनने के लिए चुनना चाहिए। जब यीशु मसीह इस दुनिया में सेवा करता था, तो लोग उसे एक राजा बनाना चाहते थे, ताकि वे पीड़ित न हों और वे हमेशा समृद्ध रहें। परन्तु हमारा प्रभु यीशु मसीह इस दुनिया में आए कि सेवा करें और न की हमारे ऊपर शासन करें। यीशु ने उनके लिए किए गए प्रस्ताव का उन पुरुषों से इनकार कर दिया। हमारा परमेश्वर इस दुनिया में टूटे दिलों को चंगा करने के लिए आया था, बंदी को मुक्त करने के लिए, लंगड़ा को फिर से चलाने के लिए और अंधे फिर से देखे इसलिए आया था। वह बंधन में से छुड़ाने और अपने स्वर्गीय साम्राज्य तक पहुंचने का रास्ता बनाने के लिए आया था। तो अब, हमें प्रभु के राज्य के लिए शक्तिशाली काम करने की आवश्यकता है क्योंकि हम प्रभु के मार्ग को जानते हैं। हमारे प्रभु ने न केवल अपने राज्य का रास्ता बना लिया है, बल्कि उन्होंने हमें यह भी सिखाया है कि उसके पैर के चरणों का पालन कैसे करें। 1 पतरस 2 : 21 ''और तुम इसी के लिऐ बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।'' इस प्रकार, हम जैतून के पेड़ के रूप में जिस तरह से प्रभु ने हमें दिखाया है उस में ध्यान से चलने की

जरूरत है। हमारे प्रभु परमेश्वर या स्वर्गदूत के रूप में नहीं आए थे, बल्कि हमारे प्रभु एक सरल इंसान के रूप में आए थे। उसने हमें दिखाया है कि हमारे शत्रुओं से कैसे लड़ें। आज, हमारा दुश्मन कौन है, वह हमारी अपनी सोच है, हमारे दिल और मन जो हमें धोखा देते हैं। यीशु ने क्रूस पर पहले से ही दुश्मन को हरा दिया है। इस प्रकार, आज हमारे दुश्मन हम खुद हैं। शत्रु केवल हमारे जीवन में दुःख और दर्द लाने की योजना बना सकता है, लेकिन यह हम स्वयं ही है जो हर प्रलोभन का विरोध कर सकते हैं और दुश्मन की योजनाओं को हरा सकते हैं। प्रकाशितवाक्य 3 : 21 ''जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पा कर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।'' हमारे प्रभु ने इस दुनिया में हमारे लिए रास्ता दिखाया और बना दिया है। यदि हम प्रभु के मार्गों में चलते हैं, जैसे की यीशु मसीह ने इस दुनिया में युद्ध जीता था, हम भी अपनी लड़ाई जीत सकते हैं। प्रभु ने हमसे वादा किया है कि वह हमारे लिए एक मकान तैयार करने के लिए गया है, और वह एक दिन हमें अपने स्वर्गीय साम्राज्य के साथ उसके साथ ले जाने के लिए वापस आएगा। हमारे प्रभु ने वादा किया है कि वह वापस आएगा और निश्चित रूप से वह नहीं बदलेगा। इस बीच, हमें इस दुनिया में उसके लिए अच्छे साक्ष्य रहना चाहिए और इस दुनिया में प्रभु के कार्यों को जारी रखना चाहिए। वह निश्चित रूप से हमें उसके साथ लेने के लिए वापस आ जाएगा। इस दुनिया में हमारी जीत जीतने के लिए, हमारे साथ प्रभु का होना जरूरी है। जैसे ही यिर्मयाह ने कहा 'मैं छोटा हूँ' प्रभु ने उसे वादा किया था कि 'मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा' उसी तरह 'प्रभु को हमेशा हमारे साथ' रखने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके लिए, हम जो कुछ भी करते है, उसके लिए हमें धर्मी होना चाहिए, और यीशु के लहू से शुद्ध होना चाहिए। भजन संहिता 41 : 1–3 ''1 क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है! विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा। 2 यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा, और वह पृथ्वी पर भाग्यवान होगा। तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़। 3 जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा; तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा।'' यह हमारे जीवन में कब पूरा होगा ? जब हमें याद आता है कि हमें आज्ञाओं का पालन करके नहीं बल्कि प्रभु की कृपा से अकेले बचाया गया था।

रोमियो 6 : 14 ''और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो।'' यह केवल प्रभु की कृपा से है कि

हमारे पास एक नया जीवन है। यह भरोसा और विश्वास हमारे भीतर होना चाहिए, केवल यह अकेले ही हमारे जीवन में आशीर्वाद लाएगा। यह यीशु मसीह के बलिदान के कारण है कि हमारे भीतर सांस है। इस प्रकार हमें इस दुनिया में अकेले प्रभु के नाम की महिमा करनी चाहिए। हमारे प्रभु ने हमें बहुतायत से प्रेम किया है और अपने एकमात्र पुत्र यीशु मसीह को इस दुनिया में भेजा, अकेले उसके लहू से हम धोए गए और अकेले उसके लहू से खरीदे गए। इस प्रकार, याद रखें कि हम केवल यीशु मसीह के लहू के द्वारा ही परमेश्वर के राज्य तक पहुंचेंगे। यहां तक कि जब यीशु मसीह इस दुनिया में था, उसने हमें यह स्पष्ट किया कि वह इस दुनिया के नहीं थे। हम भी इस गुजरते हुए दुनिया में अजनबी हैं, हम परमेश्वर के राज्य के बच्चे हैं। हमारा ध्यान क्रूस से नहीं हटना चाहिए। तभी तो हम परमेश्वर के राज्य तक पहुंचने का आश्वस्त हो सकते हैं। हमारा प्रभु निश्चित रूप से हमें लेने के लिए वापस आएगा, इस प्रकार हमें अंत तक 'हरी जैतून का पेड़' रहना चाहिए, उसकी महिमा के लिए। हमें इस वचन पर विश्वास करना चाहिए, वचन किसी से भी पक्षपात नहीं करता है। इस प्रकार, हम दुश्मन को चुनौती दे सकते हैं और दुश्मन हम से भाग जाएगा, हम पढ़ते हैं यिर्मयाह 20 : 11 ''परन्तु यहोवा मेरे साथ है, वह भयंकर वीर के समान है; इस कारण मेरे सताने वाले प्रबल न होंगे, वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए उन्हें बहुत लज्जित होना पड़ेगा। उनका अपमान सदैव बना रहेगा और कभी भूला न जाएगा।''

वचन सभी को आशीर्वाद दे !

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा म.